फलित ज्योतिष और विज्ञान

जयंत विष्णु नार्लीकर

'धनुर्धारी' एक मराठी पत्रिका द्वारा प्रसिद्ध खगोल वैज्ञानिक डा. जयन्त नरलीकर से ज्योतिष को लेकर विभिन्न प्रश्न पूछे गए । इस वार्ता को डा. जयन्त नार्लीकर ने 'तर्कशील' के पाठको के लिए विशेष रूप से भिजवया हैं। जिसे मराठी सें अनुवाद करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा हैं। - संपादक

21वीं सदीं में भारत के आगे सबसे बड़े दो प्रश्न आए सबसे बड़ी रूकावट यानि बढ़ने वाली जनसंख्या । पिछले वर्ष इस दिशा में हम चीन से भी आगे निकल गए हैं, ये हमें एक परेशान करने वाली बात हैं अगर जीवन-मान बढ़ाना है दरिद्र रेखा मिटानी है तो जनसंख्या नियन्त्रण आवश्यक है और इसके कारणों में बड़ी समस्या अंधश्रद्धा है। शिक्षित समाज होते हुए भी अंधश्रद्धा नाम की चीज होने के कारण हम संसार की स्पर्धा में पीछे रह गए हैं क्योंकि अंधश्रद्धा के साथ आधुनिक विज्ञान द्वारा सिद्ध किए हुए विचार हम नकारते रहते हैं।

तथा प्रगति की दिशा की ओर हम आंखे बंद करके बैठे है

संध्या सन्दर्भ में अभी युवा सुबह (25-10-2001) में संध्या जोशी का लेख ''क्यों कल की बात'' पढ़ने लायक है यह मनोरंजक होने के साथ-2 हृदय विदारक भी है।

1. प्रश्न : आकाश के साथ संबंध इस किताब के पृष्ठ संख्या-30 एवं 322 में नैसर्गिक उत्पात एवं बीमारी प्रसार का धुमकेतू के साथ संबंध नहीं है ऐसा लिखा है, परन्तु 48वे प्रकाशन में धूमकेतू के साथ संबंध है हम हमेशा विक्रम सिंघा के तर्क को पुष्टि करने वाले संसोधन करके जीवन सृष्टि बाहर से पृथ्वी पर आई ऐसा निष्कर्ष निकालते है इन दो विसंगतियों पर आपके विचार क्या है। इस विषय पर आगे संसोधन किए गए इनके अनुसार Main Power & Money Use किया गया है। बराहमिहिर ने अपनी बृहत संहिता में ऐसे विधान किए तब बराहमिहिर की बाकी की व्याख्याएं वैज्ञानिक लगती है क्या ? नहीं तोक्यों नहीं । इस बारे में आप यूनिवर्सिटी के साईस विभाग में हो, इसके बारे में आपका विरोध क्यो ? वैदिक गणित पर भी अपने एतराज किया है, ऐसा श्री दिलीप कुलकर्णी में 30.9.01 के महाराष्ट्र टाईम्स में लिखा है, इस पर आपकी कोई प्रतिक्रिया ?

उत्तर : धुमकेतू के विधान में विसंगति पहले ही चली आ रही परम्परा के अनुसार आकाश में धुमकेतू दिखना एवं पृथ्वी पर होने वाला उत्पात के साथ इसका संबंध जोड़ा जाता है, उदाहरण के लिए किसी बड़ी हस्ती स्वर्गवास होती है ऐसा हमारा मानना है। यह सब पुष्टिदायक प्रमाण नहीं है अनेक धुमकेतू आ कर गए और पृथ्वी पर उत्त्पात होता ही रहता है, पर हर अनिष्ठ के पीछे धुमकेतू का हाथ है, ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं है।

हॉएल - विक्रम सिंघा के सिद्धान्तनुसार रोग जन्तु धुमकेतू की पूंछ से आकाश में और पृथ्वी के वायुमण्डल में आते हैं वहां से पृथ्वी तल पर पहुंचने में उन्हें छः महीने से एक वर्ष की अवधि लग जाती है। उसके बाद ये रोग जन्तु रोग फैलाने में सक्षम होते है, ऐसा हॉएल - विक्रम सिंघा का सिद्धान्त कहता है यानि सब से पहले यह सिद्धान्त सिर्फ अलग-2 रोगों का धुमकेतू के साथ सबंध बताता है और इसके अलावा जो दूसरे उत्पात या कोई बड़ी हस्ती के मरने पर इसका संबंध बताता है । रोगों का संबंध तत्काल असर वाला नहीं ये विचार हमे सबसे पहले समझना चाहिए क्योंकि धुमकेतू दिखाई देने के कुछ महीने बाद सूरज के नजदीक से जाता है। उसमें सभी धुमकेतू की पूंछ के मार्ग के पृथ्वी के वायुमंडल के संपर्क करता हुआ नहीं जाता । इसके बाद साल भर में रोग जन्तु बीमारी फैलाते है यानि धूमकेतू दिखाई देने या बीमारी फैलने में दो-ढाई साल लग जाते हैं। पीछे कुछ सालो

में धुमकेतू के मार्ग में पृथ्वी की कक्षा आई ऐसे समय धुमकेतू के जीवन्तु पृथ्वी पर आ सकते है। थोड़े में अगर कहा जाए तो धुमकेतू अनिष्टकारक है ये पहले की समझ के अनुसार और हायल विक्रमसिंघा इनके सिद्धान्त के अनुसार काफी फर्क है ये हमे ध्यान में लेना चाहिए ।

मैनें इस विषय पर लगभग 60 लाख रूपए खर्च कर दिए हैं। पांच संस्थानों के वैज्ञानिक इसके सहभागी थे । बराहमिहिर इनकी बृहतसंहिता में आखिर क्या विधान रह गया है ? अभी हमारे प्रयोग के निष्कर्ष में क्या निकलने वाला है इसमें अभी काफी समय लग सकता है कारण सैम्पल का निरीक्षण अभी शुरू है इस विधान के बारे में मैं अभी बता नहीं सकता हायल विक्रम विंघा सिद्धान्त का निरीक्षण किया जा रहा है। वो सिद्ध या सर्व सामान्य होगा या नहीं ये बताना मुश्किल है बराहमिहीर का ये श्लोक ध्यान में रखने योग्य है :-

उदयन्नेव सुभिक्षं चतुरो मासान
क्रोत्यसौ सार्द्धान्
प्रादुर्भाव प्राय करोति च क्षुद
जन्तुनाम

(वाराही बृहत संहिता अ.11)

इसके धुमकेतू से क्षुद्र जन्तु का प्रादर्भाव होता है ऐसा बताया गया है, ये जन्तु कहां से आये है ? उनका प्रादुर्भाव कैसे होता है? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान के अनुसार किसी व्याख्या के आगे जाकर हमें नहीं मिल सकते । इन व्याख्याओं का संबंध हॉयल विक्रम सिंघा सिद्धान्त से अगर जोड़ा जाए तो ऐसी कारण मिमांसा बराहमिहिर के लेखों में नही मिलती, तब बराहमिहिर के बाकी के विधान वैज्ञानिक हो सकते हैं ? इन प्रश्नों के तर्कशास्त्र मेरी समझ के बाहर है, एक व्यक्ति के किए हुए अनेक विधानों में से एक विधान वैज्ञानिक तौर पर सही है तो बाकी के सारे विधान कहां सही हो सकती है (बिना परीक्षण के) ये ग्रह अजीब है।

शिक्षा का भगवाकरण ये राजकीय प्रश्न है, इस पर मुझे ज्यादा कुछ कहना नहीं वैदिक गणित के अनुसार जिस चीज का बोल बाला था वे मूल में वेदो में नही था, ऐसा तत्वज्ञानियों ने बताया है, प्रो. दाणी इनका Economical & Political Weekly (July 31, 1993) में अंग्रेजी में लेख है इसके सिवा मराठी विज्ञान परीषद् पत्रिका में अक्तूबर 2001 श्री प्रकाश बुरटे इनका मराठी लेख है, गणित के अनुसार देखा जाए तो ''उच्चगणित'' कहने योग्य कुछ भी नहीं है ये हमें कबूल करना चाहिए । उल्टा अगर ये वैदिक गणित के अनुसार अगर हम विधान करते है कि देखो हमारे पूर्वज गणित में कितनी तरक्की कर गए थे, तो हम गणित के आधुनिक विश्व में हम हंसी उड़वाएंगे ।

2 प्रश्न : 'आकाश के साथ जोड़ो नाता', इस पुस्तक में हम बर्नी सिल्वर मन के नाम दो परीक्षण लिखे हुए हैं, पीगन स्टेट यूनिवर्सिटी में ऐसा व्यक्ति कभी हुआ ही नही ? ऐसा पत्र एस्ट्रोलॉजीकल मैगजीन जुलाई, 2001 पृष्ठ क्रमाक 608 में आया था इसके बारे में आप कुछ प्रकाश डालिए ।

उत्तर : बर्नी सिल्वर मन अस्तित्व में है या नहीं, श्रीमती गायत्री देवी वासुदेव इन्होंने अपनी अधुरी जानकारी अनुसार मुझ पर आरोप लगाने से पहले मुझे अगर पूछा होता तो वह जानकारी मैंने अवश्य दी होती अथवा परीक्षण करने के बारे में स्त्रोत बताया होता ।

बर्नाड एल. सिल्वर मन ने मिशीगन स्टेट यूनिवर्सिटी से 1969 में M.S. एवं 1971 में PHD की थी वो उस यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर नहीं थे (वो वहां प्रो. थे, ऐसा मैंने 'आकाश के साथ जोड़ो नाता' जिसके अंग्रेजी रूपान्तर A Cosmic Adventure में ऐसा नहीं कहा था) सिल्वर मन उसके बाद संख्या शास्त्र एवं मार्केटिंग रिसर्च में काम करते थे कुछ समय पहले स्टाक्टन स्टेट कॉलेज में पढ़ाते थे उसके बाद गेलफ एण्ड रूझवेलर कॉलेज में थे एवं अब बेनेजिक्टाइन युनिवर्सिटी में पार्ट टाईम पढ़ाते हैं। 10 अक्तूबर, 2001 को उनकी तरफ से मुझे ई-मेल भी मिला टी.वी. पर क्विज कार्यक्रम के अनुसार सिल्वर मन Please Stand Up? आप के अस्तित्व के बारे में हमे शक हो रहा है। उनके बारे में उन्हें मजाक लगता है।

बर्नी सिल्वर मन के जिस संसोधन का उल्लेख मैने किया है, उसके बारे में मैंने नीचे लिखी नियत तालिका दी है :-

1. जनरल आफ साइक्लॉजी वाल्यूम-77 (2) पेज 141-149 = 1971
2. जनरल ऑफ साईक्लाजी वाल्यूम-87 (1) पेज 89-95 = 1974

बर्नी सिल्वर इनके कार्य का वर्णन जे. पॅसचॉफ इनमें Contemporary Astronomy इस पुस्तक के भाग-2 में किया गया है । अमेरिकन एस्ट्रोनॉमीकल सोसायटी के मरक्यूरी इस नियत तालिका (नवम्बर-दिसम्बर पेज 137 1980) किया गया है। ये सभी प्रस्थापित नियततालिकाएं हैं उनमें ये वर्णन स्वतन्त्र रूप से कोई भी पढ़ सकता है। हमारे पाठको को ये पढ़ कर जानकारी लेना अच्छा लगेगा ।

3 प्रश्न : वर्ष 1982 मे सभी ग्रह एक तरफ आने की वजह से पृथ्वी पर उत्पात होगा ये बात जुपीटर इफैक्ट इस पुस्तक में भूगोल तत्वज्ञानियों किया था, वो हम ज्योतिषीयों के नाम पर दिया गया है, मूल वस्तु क्या है ?

उत्तर - 1982 में जुपीटर फैक्ट का बोलबाला था, परन्तु इस सब को एक तरफ रखते हुए कुछ उत्पात (अनिष्ठ) होगा ऐसा आभास उस समय समाचार पत्रों मे बताने वालों ने ही निर्माण किया ।

कृपया इस सन्दर्भ में Times of India 25-1-99 इस अंक का लेख देखिए, 5 मई, 2000, 10 मार्च, 1982, 5 फरवरी, 1962, इस समय अनेक ग्रह एक तरफ आने की वजह से कुछ अनर्थ होगा ऐसा फलित ज्योतिष बताने वालों ने कहा, 1962 के प्रसंग में पंडित नेहरू को हवाई जहाज से न जाने की सलाह दी गई थी, तब उन्होंने ऐसे विश्वास पर अमल न करते हुए जानबुझ कर हवाई जहाज से गए थे, वास्तव में इन तीनों तारीखों में कोई अनिष्ठ नहीं हुआ था ।

4 प्रश्न : प्लेनेट इस ग्रीक शब्द का अर्थ ही आयोग्य होता है ?

ज्योतिष शास्त्र का उद्यम भारत या ग्रीक में हुआ, टालेमी ग्रीस इस का श्रेय किसी को नहीं दे सकते ? झोडाइका ये शब्द संस्कृत से आया ऐसा पाश्चात्य विद्वानों का कहना है, आहोशत्र इस शब्द में अ-त्र का लोप होकर (होरा) ये शब्द तैयार होगा । नक्षत्र 24 है हौरां चौबीस ये होरा यानि Hour ऐसा Horoscope ऐसा शब्द तैयार हुआ इस विधान पर आपका अभिप्राय क्या हैं ?

उत्तर : प्लेनेट यानि भटकने वाला ये ग्रीक शब्द समृददर्शनी अनियमियत लगने वाला इस प्रचार में आया उस समय ग्रीक में गुरूत्वाकर्षण नियम पता नहीं था इसीलिए उनको ग्रह आकाश में भटकते रहते हैं, ऐसा लगता था उस समय में नाम प्लेनेट गल्त नहीं था, आगे 17वीं सदी में न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण के नियमानुसार ये अपनी ही कक्षा में घुमते है ऐसा सिद्ध हुआ तब उन ग्रहों को भटकने वाला कहना ठीक नहीं, यह पता चला ।

जिसको हम फलितज्योतिष कहते हैं, उसमें प्रमुख ग्रहों का मानव जीवन, मानव स्वभाव पर प्रभाव होता है, इस विषय पर पाश्चात्य संसार से भारत में आया, वैदकालिन वाङमय में शुभ दिन, अशुभ समय, उत्पातो का नक्षतो के साथ संबंध इत्यादि कल्पना हमें मिलती है, गर्ग संहिता में शकुन शास्त्र का वर्णन है, उसमें जन्म के समय चन्द्रमा को कौन से नक्षत्र में होना, ऐसे ही शुभ-अशुभ संबंध जोड़ा जाता है इसी को नक्षत्र विद्या कहते है ।

आज इतिहास ऐसा कहता है कि जन्म के समय पत्रिका बनाने का रिवाज ईशा पूर्व दूसरे साल में ग्रीकों के प्रभाव में रहने वाले इजिप्त में शुरू हुई और जीसस क्राईष्ट के जन्म के बाद भारत में आया सन 150 इस समय उज्जैन में पश्चिमी क्षत्रप रूद्र दमन के दरबार ईजिप्त में रख गया फलित ज्योतिष का अनुवाद संस्कृत में किया गया, यमनेश यमनेश्वर तब ग्रीक समाज का प्रमुख था, इस भाषान्तर को पाश्चात्य कल्पना और नाम का भारती करण किया गया । मूल अनुवाद गद्य रूप में था, जो आज उपलब्ध नहीं है, लेकिन उसका पद्य में रूपान्तर (यवन राजा स्पुजिध्वज ने किया था, वो आज उपलब्ध है, वो 270 इस शतक में पश्चिमी क्षत्रप रुद सेन द्वितीय के काल में हुआ,

स्फुजिध्वज इनका (यवनजातक) इस ग्रन्थ में है डेविड प्रिंगी का अंग्रेजी अनुवाद आप देख सकते हैं ग्रीक-इजिप्ट इन्होंने कल्पना का हिन्दी कारण किया हुआ हम देख सकते है, उसके बाद मीन राजा के वृद्ध यवन जातक (सन् 300-325) में बड़ी किताब भी ग्रीक स्त्रोत से है।

स्फुजिध्वज इनके लेखों में राहु-केतू का उल्लेख पर मीन राजा के राहू का ग्रह करके उल्लेख है वराहमिहिर के 6वें शतक में 'बृहतजातकम' इस ग्रन्थ का भारतीय फलित ज्योतिष महत्व का माना गया है, उन्होंने ग्रीक प्रभाव उल्लेख किया था, नीचे लिखा श्लोक देखिए ।

मलेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम ।
ऋषिवतेऽषु पूज्यन्ते कि पुन दैविद हिजः ।।

(बृह. 2 अ. 14)

संस्कृत विद्वान कुन्हन राजा (Survey of Sanskrit literature, Bombay 1962 पेज 275-277) यानि इनके पूर्व के ग्रन्थ अच्छी तरह से अभ्यास करके जिनको हम आज ग्रह स्थिति के अनुसार के आधार पर फलित ज्योतिष कहते हैं के मूल में वैदिक न होकर बाहर से आया ऐसा समझा जाता है, केवल 'अहोरात्र' (मराठी शब्द) सम्पूर्ण ग्रन्थानली देखकर निर्णय करना गलत होगा ।

5 प्रश्न :- वेदों में ज्योतिष को काल ज्ञान शास्त्र कहा गया है ग्रहों से मानव काल गिन सकता है इसके एवज में गुरूत्वाकर्षण या ज्योतिष का आधार ऐसा हमने ग्रहों से लिया, एवं गुरूत्व कर्षण में नियम अनुसार फलित अवैज्ञानिक है? ऐसा हमने क्यों कहा है? संस्कृत ग्रन्थों में गुरूत्वकर्षण का उल्लेख है क्या?

उत्तरः- इन प्रश्नो का काफी बोलबाला है, इसीलिए मैं इसे विस्तार से बतलाऊँगा ।

वेदों में ज्योतिष अनुसार गणित और खगोल इनके अनुसार काल मापन पद्धति हमें मिलती है सूर्य चन्द्र और नक्षत्र इनके पर्व भूमि पर कलैण्डर करने का काम महत्वूपर्ण है वैदिक काल समाज में यज्ञ का महत्व था और इसके लिए शुभ और अशुभ क्या है, ऐसी कल्पना तब कर ली गई इसीलिए और खेतों के लिहाज से मौसम कैसा होगा, इसके लिए काल मापन पद्धति की आवश्यकता थी परन्तु इस वैदिक काल मापन पद्धति में ग्रहों का उल्लेख नहीं, आर्य भट्ट वराहमिहिर भास्कराचार्य, आदि वैदकालीन समय से न होकर काफी आगे के समय से थी । ग्रहों का मानव पर प्रभाव होता है । इसके पीछे क्या कारण है ? अगर इस प्रश्न का उत्तर वैज्ञानिक दृष्टि से चाहिए तो और फलितज्योतिष ये विज्ञान है ऐसा आग्रह फलित ज्योतिषयों की तरफ से किया जाता रहा है अगर विज्ञान की दृष्टि से इसका उत्तर खोजा जाये तो ज्ञात होने वाले बलों में से गुरूत्वाकर्षण ये सिर्फ एक ही बल पर हम विचार कर लेते हैं खगोल शास्त्र की घटनाओं का अभ्यास करते हुए इसी दृष्टिकोण से देखा जाता है फलित ज्योतिष पर विश्वास रखने वालों के अनुसार चन्द्रमा की वजह से ज़्वार भाटा आता है उसी तरह ग्रहों की वजह से मानव रक्त में प्रभाव होता है और इस वजह से मानव पर भी परिणाम होता है, ऐसा दावा किया जाता है ज्वार भाटा की वजह गुरूत्वाकर्षण ही है और इसका मानव रक्त पर परिणाम न के बराबर है।

अगर फलित ज्योतिष समर्थक ऐसा कहना चाहते है कि हमारा विषय मूल में विज्ञान की कक्षा में नहीं आता इसके बाद कुछ कहा ही नही जा सकता फलित ज्योतिष विज्ञान नहीं परन्तु विज्ञान के निष्कर्ष लगाने वालों की मूर्खता विज्ञानियों ने नहीं करनी चाहिए ऐसा निष्कर्ष हम निकालते है और इस बात को यहीं खत्म करते हैं।

परन्तु अगर ऐसा कहा जाए तो फलित ज्योतिष ही विज्ञान है पर ग्रहों का मानव पर प्रभाव पड़ता है काम में आने वाले चार ज्ञात बल का न होकर नया अलग ही है तब उस बात का विज्ञान के अनुसार निरीक्षण करना चाहिए ।

उसके लिए मूल में ग्रहों का मानव पर परिणाम किस रूप में दिखाई देता है इस चीज को कैसे गिना जायें । इनका सच्चा झूठा वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षण किया जाना चाहिए । उसी तरह कई सारे परीक्षणों के निष्कर्ष मैनें अपनी 'आकाश के साथ जोड़ो' नाते

इस किताब में 50 अध्याय में कहा गया है।

6. प्रश्न : पूर्णिमा या अमावस्या इन दिनों रक्त का प्रभाव विशेष बढ़ता नहीं तब चन्द्रमा का मानसिक रोगों के साथ संबंध जोड़ा जाता है। ऐसा अवैज्ञानिक होता है ऐसा आपने लिया है ?

- 'ल्युनाटिक' ये शब्द पागल लोगों के लिए कहा जाता है प्लेनेट अनुसार अब ये शब्द भ्रामक है। पर इस तरफ भारतीय ज्योतिषयों ने अलग ही मुद्दा बताया है। पंचाग में विष्टीकरण (चन्द्रमा और सूर्य में 45 डिग्री का अन्तर) में अनिष्ट माना जाता है। उस समय शुभ कर्म नहीं किए जाते थे विष्टीकरण पूर्णिमा -अमावस्या के अनुसार हर 3½ दिनों में से महीने में आठ बार आता है । तब पृष्ठ क्रमाक 332 में लिखे हुए परीक्षणों का जवाब हमें मिल सकता है क्या ? यानि विष्टीकरण उनका परीक्षण कर सकते हैं क्या ?

इस प्रकार परीक्षण मुम्बई में करने के लिए हमें विद्या पीठ शासन इनको सिफारिश करनी चाहिए क्या ?

उत्तरः- वैज्ञानिक परीक्षण करने से पहले हमें उनके करणों का पता लगाना पड़ता है इस वजह से विष्टीकरण या दूसरे कोई फलित ज्योतिष की व्याख्या का परीक्षण करने से पहले नए प्रयोग एवं परीक्षण का लेखा रखा गया है, उदाहरण जैसा बर्नी सिल्वर मन ने किया है ऐसा प्रयोग भारतीय पार्श्व भूमि पर करना आवश्यक है इसलिए फलित ज्योतिषयों की अगर तैयारी होगी तो अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति या विज्ञान परिषद् ये आगे आयें ऐसा में उनसे निवदेन करता हूं ?

7 प्रश्न : बार्मन इफैक्ट इस जैसी मोहम भविष्य बृहत जातक, जारक फरीजात इत्यादि मान्य ग्रन्थों से आप उदाहरण दे सकते हैं क्या ?

उत्तर : हम विशिष्ट व्यक्तियों के भविष्य आप को जो पंसद हो उनके अनुसार रखेंगे, वो कहां तक सही है ये हम परीक्षण करके देख सकते हैं ? इसके लिए हमें दस व्यक्तियों के नाम न बाताते हुए पत्रिका दिखाई जायेगी उस अनुसार हम ऊपर लिखे ग्रन्थों के अनुसार क्या बताया जाता है ये हम देखेंगे ।

8 प्रश्न : जॉ-क्ली पैकेअर इनके अनुसार मुकर्रस्क इस रशियन शहर की पत्रिका बनाई नहीं जा सकती, उस शहर में दिनांक 1-10-2001 दिन 10 बजे की पत्रिका बनाई नही जा सकती ऐसा विधान एक खगोल बिदु के अनुसार है, ऐसा आप कह सकते है क्या ? वहां घड़ियां नहीं है क्य,

उत्तर : पत्रिका बनाने के लिए ग्रह आकाश में कहां है इसका पता लगाना पड़ता है मुर्कारस्क यहां से ग्रह दिखाई ही नहीं देते वो क्षितीज के नीचे कहां पर है वो गणित के अनुसार ही बताया जा सकता है, परन्तु ये बात उनकी पत्रिका के लिए उपयोगी नहीं है कारण उर्वापार चलने वाले फलित ज्योतिष कल्पना जन्म के समय आकाश में दिखाई देने वाले ग्रह एवं रशिमो के बारे में होती है।

9 प्रश्न : ज्योतिष और कुण्डली यानि बायोन्द्रिम बायॉला जिकल कलाक्स ऐसा अगर कहा जाए तो वो गल्त है क्या ऐसी जैविक घड़िया, कलैण्डर, बनाने वाले कुण्डली व ग्रह इनके सिवा कोई दूसरा आसान उपकरण आपको पता है क्या ?

उत्तर : बायोन्द्रिम बॉयलोजिकल कलॉक ये सिर्फ शब्द है इसका कोई वैज्ञानिक सिद्धान्त नही है। आपको उसके बारे में सही शब्दो को बताना होगा उसके बाद ये सही है या गलत ये बताया जा सकता है।

प्रश्न : 10 आइसटाईन के सिद्धान्त के अनुसार टिप्पणी लिखते हुए स्टीफन हांकिग्स A brief hisoty of time पुस्तक में पृष्ठ क्रमाक 36 में लिखा हुआ Each individual has own personal measurment of time that depends where he is and how he is moving जन्म कुण्डली में कहने योग्य है क्या ?

उत्तर : आईसटाइन के अनुसार हर निरीक्षक अपनी ही टाईम गिनने की प्रक्रिया है उसे प्रोपर टाईम कह सकते हैं अलग-2 प्रकार से दौड़ने वाले निरीक्षणकों का Proper Time एक विशिष्ट सूत्र से जोड़ा जाता है इस Proper Time का कुण्डली के साथ सम्बन्ध नहीं है।

- डा. जयंत नरलीकर

(मराठी से अनुवाद : गुरमीत सिंह/रवि नथानी)